माटी कर जाता

अक बिरसा नांव कर अक राहय। ओ गांव म आजी नतनिन राहय। उन जादा कोदो कुटकी बोवैं अउर ओहीच ले खावैं। तो कोदो कुटकी ले दडेके नाने उंखर जाता फुट गै राहय।

अक दिन आजी अपन नतनिन ले कथै,''नतनिन तै खेत म जा अउर जाता के नाने माटी खनके आनबे।'' फेर ओखर नतनिन माटी खनेले गईस अउर खेत ले लाल माटी आनिस। फेर नतनिन माटी ले फिजोईस अउर जाता बनाईस। पर अक्केच दिन म अउर घाम म रहिस तो ओ जाता चटक गईस।

तो नतनिन अपन आजी के गुठयाईस,''आजी ए जाता तो चटक गै।'' फेर ओखर आजी आयके देखिस,''तै कसना माटी ले आनेहेस'' कथै। ''कडिया माटी आनते'' कथै। फेर नतनिन दुइबारा कडिया माटी कर नाने गईस। फेर कडिया माटी ले आनिस। माटी ले फिजोईस अउर भुंस डालिस अउर सानिस। फेर जाता बनाईस। फेर जाता ले आधा बनायके लकड़ी डालिस। तब ओखर जाता बनिस अउर ओ ले सुखवा देईस। तो ओखर आजी कथै,''बाई, ये जाता म सिरिप कडियाच माटी म बनथै अउर सिरिप कोदो कुटकी ले दडेके काम आथै।''

फेर उन दुनोझन कोदो कुटकी दडके भात खाईन।

लेखक: बुधराम मेरावी